International Journal of Sociology and Humanities

ISSN Print: 2664-8679
ISSN Online: 2664-8687
Impact Factor: RJIF 8
IJSH 2023; 5(1): 69-71
www.sociologyjournal.net
Received: 08-05-2023
Accepted: 13-06-2023

सरिता
एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, अदिति महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
सरिता
एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, अदिति महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

ग्रामीणों का लड़कियों के प्रति दृष्टिकोण : विश्लेषणात्मक अध्ययन

सरिता

DOI: https://doi.org/10.33545/26648679.2023.v5.i1a.73

सारांश
इस शोध में ग्रामीणों की लड़कियों के प्रति क्या सोच है, दृष्टिकोण है इसका विश्लेषणात्मक दृष्टि से अध्ययन किया गया है। इस शोध में ग्रामीणों का लड़कियों की शिक्षा के संबंध में विचार जानना, लड़कियों के लिए व्यावसायिक क्षेत्र के संबंध में विचार जानना, आदर्श बेटी के गुण ग्रामीणों की समझ से जानना, लड़कियों की रुचियों के संबंध में विचार जानना एवं उनका विश्लेषण करना कुछ मुख्य उद्देश्य हैं। इस शोध को हरियाणा प्रदेश के झज्जर जिले में किया गया है। इसमें गुणात्मक अनुसंधान पद्धति के अंतर्गत साक्षात्कार, अवलोकन एवं अनौपचारिक वार्तालाप के द्वारा आंकड़े एकत्रित किए गए हैं एवं तदुपरांत विश्लेषण कर निष्कर्ष निकाले गए हैं।

कूटशब्द : दृष्टिकोण, ग्रामीण, लड़कियाँ

प्रस्तावना

शोध के उद्देश्य

इस शोध के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैं:

- ग्रामीणों का लड़कियों की शिक्षा के संबंध में विचारों का अध्ययन करना।
- लड़कियों के व्यावसायिक क्षेत्र के संबंध में विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
- आदर्श बेटी के संबंध में ग्रामीणों के विचारों का समालोचनात्मक अध्ययन करना।
- ग्रामीणों का लड़कियों की रुचियों के संबंध में विचारों का अध्ययन करना।
- ग्रामीण लड़कियों के सषक्तीकरण हेतु सुझाव देना।

शोध प्रविधि

इस शोध में गुणात्मक शोध उपागम को अपनाया गया है। जिससे आंकड़ों को गहनता से समझ कर विश्लेषण किया जा सके। गुणात्मक शोध उपागम सामाजिक क्षेत्र में शोध हेतु प्रयुक्त प्रमुख उपागम है जो समाज को गहनता से समझने, विभिन्न अर्थो से समझने में कारगर है। इस शोध के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए इस शोध उपागम का चयन किया गया है।

शोध उपकरण

इस शोध कार्य को पूरित करने हेतु कई शोध उपकरणों का इस्तेमाल आंकड़े एकत्रित करने में किया गया है। इस शोध में इस्तेमाल किए गए शोध उपकरण है :

साक्षात्कार

इस शोध में आंकड़े एकत्रित करने के लिए ग्रामीणों के साक्षात्कार लिए गए। जिनमें बाद में ग्रामीणों की प्रतिक्रियाओं को विश्लेषित किया गया।

अनौपचारिक बातचीत

इस शोध में साक्षात्कार से पहले एवं बाद में जब भी अवसर बना अनौपचारिक बातचीत द्वारा भी जानकारी प्राप्त होती रही और इसका उपयोग आंकड़ों के विश्लेषण में किया गया।

अवलोकन

शोध में अवलोकन से भी आंकड़े एकत्रित किए गए और सभी तकनीकों से प्राप्त आंकड़ों को मिलाकर उनका विश्लेषण किया गया और निष्कर्ष निकाले गए।

शोध का महत्त्व

ग्रामीण संदर्भ में अधिकांश शोध दलितों के सामाजिक समावेशन, बालिकाओं के समावेशन, शैक्षिक समावेशन इत्यादि अवधारणा पर हुए हैं परंतु ग्रामीणों के लड़कियों के प्रति दृष्टिकोण से संबंधित नहीं हुए हैं। यह क्षेत्र अभी तक अछूता सा ही रहा है। ग्रामीण लड़कियों के शैक्षिक व सामाजिक समावेशन, उनके सशक्तीकरण एवं सहभागिता की दृष्टि से ग्रामीणों के लड़कियों के प्रति दृष्टिकोण को समझना आवश्यक है। नारी सशक्तीकरण तभी संभव है जब सभी क्षेत्रों की नारी सशक्त बनेगी। ग्रामीण नारी के विषय में, वहां की लड़कियों के विषय में ग्रामीणों की क्या सोच है, क्या विचार है, उसको समझना महत्त्वपूर्ण बन जाता है। यह शोध सामाजिक संगठनों, शैक्षिक जगत एवं सरकार एवं प्रशासन सभी के लिए महत्त्वपूर्ण है।

सैंपल

इस शोध कार्य को करने के लिए पचास ग्रामीणों से साक्षात्कार लिए गए जिनकी आयु 28 वर्ष से लेकर 76 वर्ष की रही। इसमें स्त्री–पुरुष की भी समान भागीदारी रखी गई। इस सैंपल में अनारक्षित, अनुसूचित जाति एवं पिछड़ा वर्ग का भी पर्याप्त प्रतिनिधित्व रखा गया। उद्देश्यपरक तकनीक से सैंपल का चयन किया गया था।

विश्लेषण एवं निष्कर्ष

इस शोध में प्राप्त आंकड़ों का गहनता से विश्लेषण किया गया। संक्षेप में यह आगे प्रस्तुत किया गया है जिसके साथ निष्कर्ष एवं सुझाव भी दिए गए हैं।

ग्रामीणों का लड़कियों की शिक्षा के संबंध में विचार

इस संबंध में पाया गया कि अधिकांश ग्रामीण (70 प्रतिशत) लड़कियों को उनकी इच्छानुसार पढ़ाने का विचार रख रहे थे। इन ग्रामीणों का कहना था कि जितनी भी लड़कियों को पढ़ने की इच्छा हो उन्हें पढ़ना चाहिए। पढ़ाई के अतिरिक्त घरेलू कार्य करना भी लड़कियों के लिए सभी ग्रामीणों ने आवश्यक बताया। ग्रामीणों का कहना था की पढ़ाई भी करनी चाहिए और घर के सभी काम भी लड़की को करने आने चाहिए।

अच्छी शादी के लिए भी (20 प्रतिशत) ग्रामीणों ने लड़की की पढ़ाई को जरूरी बताया। ग्रामीणों का कहना था की शादी भी जरूरी है और पढ़ी–लिखी लड़की को अच्छा वर और ससुराल मिल जाता है इसलिए लड़की को पढ़ना जरूरी है।

(10 प्रतिशत) ग्रामीण इस विचार के थे कि अगर लड़की मान–मर्यादा बनाए रखे, इज्जत से पढ़े तो उसे पढ़ाना चाहिए, नहीं तो उसका विवाह कर देना चाहिए। इन ग्रामीणों का कहना था कि घर, परिवार, गांव की इज्जत लड़कियों से होती है, कोई लड़की गलत कार्य करती है तो बदनामी पूरे गांव की होती है। इसलिए लड़कियों को ऐसे नहीं पढ़ाना चाहिए कि वह गांव की इज्जत को खराब करे।

आंकड़ों से स्पष्ट है कि अधिकांश ग्रामीण लड़कियों की शिक्षा को लेकर सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं और लड़कियों को उनकी इच्छानुसार पढ़ने देने के पक्षधर हैं परंतु घर–परिवार, गांव की मान–मर्यादा, इज्जत को भी लड़कियों से जोड़कर देखते हैं। उनकी अच्छी शादी की दृष्टि से भी पढ़ाई का महत्त्व स्वीकारते हैं। ग्रामीणों की सोच में बदलाव की दरकार है जहां वे लड़की से ही मान–मर्यादा, इज्जत को जोड़कर देखते हैं। मात्र अच्छे विवाह को ही मस्तिष्क में रखकर लड़कियों को पढ़ाया जाए यह सोच भी लड़कियों के लिए सकारात्मक नहीं है। अतः ग्रामीणों में लड़की का आत्मनिर्भर बनने, सशक्त बनने के लिए शिक्षित होना आवश्यक है यह समझ विकसित करने की आवश्यकता है। सरकार, प्रशासन को इस दिशा में कार्य करना चाहिए।

लड़कियों के व्यावसायिक क्षेत्र के संबंध में विचार

इस संबंध में प्राप्त ग्रामीणों की प्रतिक्रियाओं को निम्न तालिका के माध्यम से प्रदर्शित एवं विश्लेषित किया गया है–

क्र.स.	ग्रामीणों की संख्या प्रतिशत में	लड़कियों के व्यावसायिक क्षेत्र
1.	60 प्रतिशत	शिक्षिका (शिक्षण)
2.	20 प्रतिशत	डॉक्टर
3.	10 प्रतिशत	बेटी की इच्छा
4.	10 प्रतिशत	अन्य
कुल	100 प्रतिशत	

स्पष्ट है कि 60 प्रतिशत ग्रामीण लड़कियों को शिक्षण व्यवसाय में रत देखना पसंद करते हैं। शिक्षण व्यवसाय की पसंद के पीछे इस व्यवसाय से जुड़ी कुछ विशेषताएं हैं – जैसे कम घंटे की, घर के पास की, केवल दिन की नौकरी जिसे लड़कियां घर संभालने के साथ–साथ आसानी से कर सकती हैं। 20 प्रतिशत ग्रामीण लड़कियों के लिए डॉक्टर का कार्य भी अच्छा मानते हैं क्योंकि यह सेवा भाव का कार्य है जिसे लड़कियां अच्छे से कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त 10 प्रतिशत ग्रामीण बेटी की इच्छा को ही महत्त्व देते हैं। इन ग्रामीणों का विचार था कि जो भी बेटी की इच्छा हो उसे वही व्यवसाय चुनना चाहिए। ये ग्रामीण लड़कियों की इच्छा को सर्वोपरि मानकर उसे स्वयं अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता देने के पक्ष में है। अन्य 10 प्रतिशत ग्रामीण लड़कियों को हाथ के कार्य जैसे सिलाई, कढ़ाई सीखाने के पक्ष में हैं और इनका विचार है कि लड़कियों के लिए सिलाई का व्यवसाय भी अच्छा है। एक ग्रामीण लड़कियों के पायलट बनने को भी सही मानता है और लड़कियों के लिए यह व्यवसाय भी उसे सबसे अच्छा लगता है।

स्पष्ट है की मात्र (10 प्रतिशत) ग्रामीण ही ऐसे हैं जो लड़कियों को उनकी इच्छानुसार अपने लिए व्यवसाय का चुनाव करने की स्वतंत्रता देने के पक्ष में है। शेष 90 प्रतिशत ग्रामीण अपनी पसंद एवं सोच को लड़कियों पर थोपना चाहते हैं जो की ठीक नहीं है। इस संबंध में ग्रामीणों को जागरूक करने की आवश्यकता है।

आदर्श बेटी के संबंध में ग्रामीणों के विचार

इस संबंध में सभी ग्रामीणों (100 प्रतिशत) का विचार था कि आदर्श बेटी में बहुत सारे गुण होने चाहिए परंतु सर्वोपरि गुण उसका घर–परिवार, गांव की मान–मर्यादा एवं इज्जत बढ़ाने का होना चाहिए। आदर्श बेटी ग्रामीणों के अनुसार वह होती है जिसका चाल–चलन ठीक होता है, चरित्र ठीक होता है, जो अपने मां–बाप का कहना मानती हैं। एक आदर्श लड़की ग्रामीणों के अनुसार वह होती है जो अपने मायके और ससुराल दोनों में अपने रिश्ते अच्छे से निभाएं एवं दोनों परिवारों की इज्जत उससे जुड़ी हुई है उसे बनाए रखें। एक आदर्श लड़की में ग्रामीण सभी गुण बताते हैं जैसे बोलचाल का सलीका, ठीक चाल–चलन, परिवार का मान–सम्मान प्रमुख है।

ग्रामीणों का कहना है कि लड़की को अपनी इच्छा से विवाह नहीं करना चाहिए, अपितु परिवार की इच्छा से करना चाहिए। आदर्श लड़की ऐसी होती है जिस पर कोई उंगली ना उठा सके। ग्रामीणों के अनुसार पहले मान–मर्यादा इज्जत है, पढ़ाई उसके बाद आती है। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि ग्रामीण मान–मर्यादा को ही आदर्श लड़की का सबसे जरूरी गुण मानते हैं। आदर्श लड़की के विषय में ग्रामीणों का दृष्टिकोण है कि यह परिवार को महत्त्व देती है और दोनों कुलों का सम्मान भी बढ़ाती है।

स्पष्ट है कि ग्रामीण गांव की मर्यादा, इज्जत को लड़की से ही जोड़कर देख पा रहे हैं। आदर्श लड़की के ऊपर मायके एवं ससुराल दोनों परिवारों की इज्जत बनाए रखने का भी बोझ है। लड़की अपने लिए नहीं जी पाएगी ऐसे माहौल में सभी जिम्मेदारी

लड़की पर ही ग्रामीण डाल रहे हैं जबकि शिक्षा जो सशक्तीकरण का साधन है उसका महत्त्व ग्रामीणों ने गौण कर दिया है। ऐसे समाज में जहां मान–मर्यादा, इज्जत सर्वोपरि होती है उसे समाज में जागरूकता फैलानी चाहिए। समाज को शिक्षित कर उनके विचारों में सकारात्मक परिवर्तन के प्रयास किए जाने चाहिए।

ग्रामीणों के लड़कियों की रुचियां के संबंध में विचार

लड़कियों की रुचियों के संबंध में ग्रामीणों ने अलग–अलग प्रतिक्रियाएं दी जिनका निम्न तालिका के माध्यम से विश्लेषण किया गया है एवं उसके पश्चात निष्कर्ष निकाले गए हैं।

क्र.स.	ग्रामीणों की संख्या प्रतिशत में	लड़कियों की रुचियां
1.	30 प्रतिशत	घरेलू कार्य
2.	22 प्रतिशत	खेलकूद
3.	20 प्रतिशत	पढ़ाई
4.	18 प्रतिशत	हाथ का काम
5.	10 प्रतिशत	लड़की की इच्छानुसार
कुल	100 प्रतिशत	

स्पष्ट है कि 30 प्रतिशत ग्रामीण घरेलू कार्य को लड़की की रुचि मानते हैं। इनका कहना है कि रुचियां क्या हैं, घरेलू कार्यों में ही होनी चाहिए। 22 प्रतिशत ग्रामीण लड़कियों के लिए खेलकूद को अच्छा मानते हैं एवं इनका कहना है कि लड़कियों को खेलों में भाग लेना चाहिए। 20 प्रतिशत ग्रामीणों के अनुसार पढ़ाई ही लड़कियों की रुचि होनी चाहिए। लड़कियों को खूब पढ़ना चाहिए और पढ़ाई को अपनी रुचि बना लेना चाहिए। 18 प्रतिशत ग्रामीणों का विचार है कि हाथ के कामों जैसे सिलाई–कढ़ाई, कुकिंग, पार्लर का काम इनमें रुचि होनी चाहिए जो काम भी आए। 10 प्रतिशत ग्रामीणों का विचार था कि रुचियां तो अपनी इच्छानुसार होती है तो लड़कियों की रुचि भी उनकी इच्छानुसार ही होनी चाहिए।

अतः आंकड़ों से स्पष्ट है की मात्र 10 प्रतिशत ग्रामीण ही लड़कियों को उनकी इच्छा से अपनी रुचि विकसित करने का विचार रखते हैं। अधिकांश ग्रामीण अपनी पसंद की रुचियां लड़कियों के लिए सही मानते हैं। रुचि के संबंध में ग्रामीणों का दृष्टिकोण सकारात्मक नहीं है। उनका दृष्टिकोण लैंगिक पक्षपात पूर्ण है। घरेलू कार्यों में रुचि विकसित करने को सही माना जाता है। स्पष्ट है कि ग्रामीणों का दृष्टिकोण संकीर्ण है एवं लड़कियों को कोई स्वतंत्रता अपनी रुचि के लिए भी नहीं है। इस संबंध में ग्रामीणों की जागरूकता के लिए युद्ध स्तर कार्यक्रम करने चाहिए। सरकार, प्रशासन, सामाजिक संगठनों को इसमें सकारात्मक परिवर्तन लाने हेतु कारगर योजना बनाकर कार्यान्वयन करना चाहिए।

ग्रामीण लड़कियों के सषक्तीकरण हेतु सुझाव

शोध से स्पष्ट है कि ग्रामीण लड़कियों का दायरा सीमित है। उनकी विभिन्न सामाजिक गतिविधियों में सहभागिता सीमित है। इन पर परिवार की इज्जत को बनाए रखने का दबाव है। पढ़ाई भी अच्छी शादी के लिए जरुरी समझी जाती है। स्पष्ट है लड़कियों का जीवन उनके लिए नहीं है। उनके संबंध में महत्त्वपूर्ण निर्णय में उनकी भागीदारी नहीं है और न ही आवश्यक समझी जाती है। कौन–सा व्यावसायिक क्षेत्र अच्छा है, रुचियां क्या होनी चाहिए, सभी में दूसरे लोग निर्णय लेते हैं। ग्रामीण लड़कियां आजादी से जी नहीं पा रही हैं।

ऐसी ग्रामीण परिस्थितियों में लड़कियों को सशक्त करने के लिए सर्वप्रथम ग्रामीणों के दृष्टिकोण में परिवर्तन करने की आवश्यकता है। यह परिवर्तन सरकार, प्रशासन, सामाजिक संगठनों इत्यादि द्वारा संयुक्त प्रयासों से लाया जा सकता है जिसमें लड़कियों के संबंध में ग्रामीण जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन एवं अन्य तरीके अपनाकर किया जा सकता है।

ग्रामीणों की संकीर्ण सोच ग्रामीण लड़कियों के सशक्तीकरण में बड़ी बाधा है। ग्राम पंचायत इस संबंध में कारगर भूमिका अदा कर सकती है। ग्राम पंचायत ग्रामीण को लड़कियों के सशक्तीकरण के संबंध में जागरुक कर सकती है। बशर्ते ग्राम पंचायत भी इस संबंध में जागरूक हो एवं सकारात्मक सोच रखती हो।

विद्यालय भी लड़कियों के सशक्तीकरण में प्रभावी भूमिका अदा कर सकते हैं। ग्रामीण लड़कियां विद्यालय आती हैं और विद्यालय आना उन्हें अच्छा लगता है। ग्रामीण विद्यालय ग्रामीण लड़कियों के सर्वांगीण विकास के पर्याप्त अवसर देकर उनके सशक्तीकरण को बढ़ावा दे सकता है। ग्रामीण विद्यालय में प्रभावी शिक्षण के द्वारा लड़कियों की समझ को बढ़ाया जा सकता है एवं उनके लिए नए अवसर तलाश किया जा सकते हैं। विद्यालय की प्रभावी भूमिका के लिए प्रशिक्षित शिक्षिकाओं का होना आवश्यक है जो इन ग्रामीण लड़कियों के प्रति न केवल संवेदनशील हो अपितु उनकी सहायता, मार्गदर्शन भी कर सके। अतः विद्यालय का उत्तरदायित्व ऐसी ग्रामीण स्थिति में बहुत बढ़ जाता है।

निष्कर्ष

इस संबंध में कहा जा सकता है कि ग्रामीणों का लड़कियों के प्रति दृष्टिकोण लैंगिक पक्षपात पूर्ण है। लड़कियों पर चीजें थोपी जाती हैं उन्हें अपनी इच्छा से, पसंद से कार्य करने, रुचि अपनाने की भी स्वतंत्रता नहीं है। उन पर परिवार की इज्जत बनाए रखने का दबाव है। इन सब दबावपूर्ण परिस्थितियों में ग्रामीण लड़कियां संघर्ष कर रही हैं। उनका जीवन उनके लिए नहीं है परिवार की इज्जत के लिए है। ऐसी परिस्थितियों में ग्रामीण लड़कियों का सामाजिक समावेशन कैसे संभव है। ग्रामीण लड़कियों की सामाजिक सहभागिता भी सीमित है। उनके आसपास रहने वाले लोगों की सोच संकीर्ण है। आवश्यकता इस बात की है कि ग्रामीण लड़कियां भी खुलकर जिए। उनका भी सामाजिक समावेशन हो, हर क्षेत्र में इनकी भागीदारी हो तभी इनका सशक्तीकरण हो सकेगा और यह ग्रामीण लड़कियां अपना अपने समाज एवं देश के विकास में योगदान कर सकेगी। उनके सशक्तीकरण को बढ़ाने के लिए सरकार, स्कूल प्रशासन, सामाजिक संगठनों को कमर कसकर कार्य करना चाहिए। अगर यह सभी कारगर रणनीति अपनाकर इस दिशा में प्रयास करेंगे तो ग्रामीणों की दृष्टिकोण में भी बदलाव आने की संभावना बन सकती है जो कि ग्रामीण लड़कियों के सशक्तीकरण में बहुत बड़ी बाधक है उसको दूर किया जा सकता है। आशा है कि ग्रामीणों के इस संकीर्ण दृष्टिकोण पर ध्यान दिया जाएगा और इसमें इच्छित बदलाव लाने की दिशा में प्रयास होंगे जो कि ग्रामीण लड़कियों के बेहतर सामाजिक समावेशन, भागीदारी विकास एवं सशक्तीकरण के लिए आवश्यक है।

संदर्भ

1. दुबे, श्यामचरण, अनु. (वंदना मिश्रा) (2005), भारतीय समाज, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत।
2. Census 2011. India. https://www.census.2011.co.in
3. Haryana. https://haryana.gov.in
4. List of villages in Bahargarh Tehsil of Jhajjar (Hr.) Village info.in. https://village.info.in>...Jhajjar
5. Social Inclusion - World Bank. https:///www.worldbank.org>topic.